प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह का जन्म शताब्दी समारोह

विशेष दीप

महिला अकादमी तथा भाई वीर सिंह साहित्य सदन के संयुक्त तत्वावधान में प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में एक समारोह आयोजित किया गया जिस में दिल्ली और पंजाब से पंजाबी के विद्वानों ने हिस्सा लिया। भाई वीर सिंह अनुशीलन साहित्य के उपसंपादक, पत्रकार, उपन्यासकार, निबंधकार थे। उन्हीं की याद में दिल्ली में भाई वीर सिंह साहित्य सदन का निर्माण हुआ था जहां पर अक्सर ऐसे समारोह आयोजित होते रहते हैं।

समारोह को शुरू करते हुए साहित्य अकादमी में पंजाबी और कार्यकारी निदेशक डॉ. संदीप कौर ने कहा कि पंजाबी के राष्ट्रवादी साहित्यकार प्रभजोत कौर और और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह की ऐतिहासिक विचार गोष्ठी में पंजाबी भाषा के विद्वान इन दोनों साहित्यकारों के कृतित्व और व्यक्तित्व पर अपने विस्तृत पेपर पेश करेंगे। उद्घाटन सम्मेलन में वरिष्ठ लेखक व पूर्व डायरेक्टर जनरल सिंह मान, पूर्व सैनिकाध्यक्ष जनरल जे जे सिंह, पंजाबी के वरिष्ठ लेखक जसविंदर सिंह तथा भाई वीर सिंह साहित्य सदन के निदेशक वजिंदर सिंह उपस्थित थे। डॉ रवेल सिंह द्वारा अतिथियों का स्वागत करने के बाद कर्नल नरेंद्रपाल सिंह की पुस्तक 'सीस' का अंग्रेजी अनुवाद तथा प्रभजोत कौर की जीवनी 'सीस दी इक अदा है' का अंग्रेजी अनुवाद स्वतंत्र रूपांतर: द स्पलाइट का लोकार्पण हुआ। मुख्य अतिथि जनरल जे जे सिंह ने जब विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता से लेकर इस्लामाबाद, बिहेन तथा अमेरिका में राजदूत रह चुके थे। उनकी इस्लाम प्रकाश के दौरान लिखी कई पुस्तक खासी चर्चित रही।

उन्होंने कहा कि प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह के साहित्य को पढ़ने हर तरह से तो लेकिन वह इनसे अपने निजी संबंधों के बारे में बात करीं। उन्होंने कहा कि प्रभजोत कौर जिसे वे बेटी जैसी समझते हैं इसलिए जब वे लंदन यहूदियत भवन में रहते थे तो वे अक्सर अपने चौरासी वाले के साथ रोहतास के लिए लाया करता था। कर्नल नरेंद्रपाल सिंह और उनकी पत्नि हरिंदर सिंह खालड़ जिसमें दोस्त हुआ करते थे और दिल्ली में दोनों एक साथ रहते थे। उन्हें ने दोनों को शादी देखे चौबीस को बहन में कराये थे और इस प्रकार दोनों दोस्त बहु भाई भी बन गये। वह भी कहा है कि जनरल के लिए नरेंद्रपाल सिंह भारत पंजाबी के वरिष्ठ कहानीकार हैं जिनकी कहानियां उन्होंने अंग्रेजी में अनुवाद की हैं। उनकी भी खुशवंत सिंह की कहानियां लिखते हैं। अपने बात समाप्त करने से पहले उन्होंने प्रभजोत कौर की एक कविता का पाठ किया जो उन्हें बहुत प्रिय है।

कुछ कविताओं का पाठ ने विशेष अतिथि जनरल

जे जे सिंह ने भी किया। शुरुआत उन्होंने शुरुआती भाषण में यह कहा था कि कविता उनके दिल के करीब से निकल जाती है। जनरल जे जे सिंह ने कहा कि उन्हें कर्नल नरेंद्रपाल सिंह के व्यक्तित्व सकेंद्रीयता और व्यक्तित्व बहुत सारे जिन्हें वह कहा उन्हें भी बहुत सिखाने को प्रेरणा मिली। सकेंद्रीयता में उन्होंने चुटकी ले सेनाधिकारियों के अलग-अलग कामों, अलग अलगकामों और दिनचर्याओं के जुदा जुदा दृष्टि क्रम को दर्शाया है। मैं यह समझता हूं कि यही ये दोनों साथ साथ भी इतनाजोड़ रहे हैं। जनरल जे जे सिंह ने भी अपनी जीवनी लिखी है जिसका अनुवाद हिंदी और पंजाबी में भी हुआ है।

डॉ. जनरल जे जे सिंह और जसवीर सिंह सारा दोनों अतिथि ये लिखते हैं और उद्घाटन सम्मेलन में भी वह पंजाबी और अंग्रेजी दोनों का निर्बाध प्रवाह करते रहे। साहित्य अकादमी पंजाबी सलाहकार बोर्ड के संयोजक डॉ रवेल सिंह ने विषयप्रवेश का बुनियाद (बेसिक्ट) भाषण दिया। उन्होंने कहा कि प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह पंजाबी के दो बड़े साहित्यकार ही नहीं बल्कि दोनों बड़े दिलचस्प प्रेमी भी थे जिन्होंने इस जोड़ी को मानुषिक से देखा है वे जानते हैं कि दोनों का जीवन कितना पेचीदा था और दिलचस्प भी। किसी ने उनकी जिंदगी पर टिप्पणी करते हुए लिखा भी है कि दोनों को मशहूर और दिलचस्प जोड़ी है। ये जिसने जसवीर लेखक हैं उन्हें ही जानकारी भी है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक भी हैं और पूरी के पीछा अर और उनका पेर भी है। एक पूरी के पूरक होने हुए भी अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व और साहित्यिक इकाइयां भी हैं। वैसे इन दोनों को एक साथ रहने पीने, प्यार मनाने करने, साहित्यिक कार्यों के बारे में खुलकर विचारों का आदान प्रदान करते हुए देखा है लेकिन इनके साथ ही व्यक्तित्वों और विचारों में अलग अलग पक्ष मजबूती के साथ रहते हुए भी देखा है। इनकी वैसे साथ विचारित जीवन भोगने के साथ साथ साथ साहित्यिक जीवन भोगते हुए भी देखा है। इसके बाद डॉ रवेल सिंह ने जहां प्रभजोत कौर के 1943 में छपे कविता संग्रह तथा 'सीस' उपन्यास से लेकर उनके अंतिम काव्य संग्रह का विश्लेषण किया है वह सारगर्भित है। इस तौर को दूसरे बड़े पंजाबी कार्यकर्ता अमृता प्रीतम के साहित्यिक योगदान की भी उन्होंने चर्चा की।

डॉ रवेल सिंह ने कर्नल नरेंद्रपाल सिंह के साहित्यिक योगदान पर अपने विचार रखते हुए कहा था कि शुरुआत उन्होंने भी कहानी लिखकर ही की थी लेकिन बाद में उन्हें लगा कि यह क्षेत्र प्रभजोत कौर के लिए छोड़ देना चाहिए। बाद में वह उपन्यास लिखने में मशगूल हो गये। वह दूसरी लेखक थे और ऐसा लगता है कि उन्हें भविष्य में ही सकने वाली पाठकों का पूर्वाभास हो गया था। उनका यह पूर्वानुमान ऐतिहासिक साबित हुआ। उनकी लगभग सवा दो दर्जन कहानियों का अनुवाद हिंदी में हो चुका है। उनकी लगभग आधा दर्जन पुस्तकों का पंजाबी से हिंदी में भी अनुवाद किया है कविता दूर नहीं और उपन्यास की छाया के नाम से।

उद्घाटन सत्र के अतिरिक्त इस विचार गोष्ठी में चार सत्र हुए जिनमें प्रभजोत कौर के कथनी साहित्य, सकेंद्रित संसार के अलावा उनका अनुवादित साहित्य, आत्मकथा आदि पर भी विद्वानों ने पेपर पढ़े तो कर्नल नरेंद्रपाल सिंह के उपन्यासों और उनकी पत्रकारिता को लेकर खासी गहरी चर्चा हुई। डॉ मनमोहन, आईएएस ने नरेंद्रपाल सिंह के आर्टिफिशियल उपन्यासों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्हें पंजाबी साहित्य में इस किस्म का महत्वपूर्ण उपन्यासकार बताया।

एक सत्र प्रभजोत कौर और नरेंद्रपाल सिंह की यादों से जुड़ा हुआ था जिसमें देशी थे चर्चाकारों थे। 1943 से वैसे इस परिवार से अपनी यादों मुलाकात का ब्योरा करते हुए कहा कि उस दिनों मैं इस टीम के डीसीट और महत्वपूर्ण लेफ्टिनेंट मनोहर भाटिया हुकम सिंह (1962-67) के पास सम्मानों का अनुवाद का इस समय की दिल्ली की इतिहास पंजाबी परंपरा और सामाजिक हिंदुस्तान में प्रकाशित कराया करता था।

भाटिया हुकम सिंह देश के ऐसे लेफ्टिनेंट जनरल रहे हैं जिन्होंने 1962 में भारत-चीन युद्ध में उनके कमांडों के आयोजन की प्रेरणा तथा 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद ताशकंद समझौते को लेकर मंत्रालयों को लगातार खासी का सहयोग किया। लेफ्टिनेंट जनरल भाटिया बड़े शांत, शालीनता और गरिमा से सदन की कार्यवाही में किसी तरह का व्यवधान उत्पन्न नहीं होने दिया। उन्होंने तीन प्रधानमंत्रियों पंडित जवाहरलाल नेहरू,लाल बहादुर शास्त्री और इंदिरा गांधी के साथ महत्वपूर्ण ढंग से काम किया। चीन में दो बार 13-13 दिनों के लिए युद्धविराम तंत्र कार्यकारक प्रतिनिधि भी रहे। उनके ऐसे ही संयुक्त व्यवहार के चलते इंदिरा गांधी ने उन्हें 1967 में राजस्थान का राज्यपाल नियुक्त किया जहां वह 1972 तक रहे।

भाटिया हुकम सिंह का यह प्रसंग इसलिए चीन में आ गया क्योंकि उनका प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह के परिवार के साथ गहरा संबंध था। इस परिवार से मेरे निकटता कैसे हुई उसका मैं संक्षिप्त ब्योरा दे चुका हूं। मुझे पढ़ने लिखने का शौक हुआ करता था इसके चलते अध्यापक एक पंजाबी पत्रिका में कर्नल नरेंद्रपाल सिंह का आत्मविश्वास एक पाठ्य संस्मरण पढ़ने को मिला जो मुझे स्पष्टिकर लगा। वह तत्कालीन सहयोगी डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के उपराष्ट्रपति सचिव थे और राष्ट्रपति भवन में ही बैठते थे। उनसे फोन पर संपर्क कर इस आलेख का अनुवाद करने की अनुमति ले ली। जब उनका यह आलेख पढ़ने के बाद तो उसे देखकर यह इसने प्रसन्न हुए कि उन्होंने अपनी एक पुस्तक अर्पित मुझे भेंट करने हुए कहा कि इसमें लिखे चाहें उनसे आलेख बता लें और वैसे ऐसा ही किया। राष्ट्रपति भवन में ही उनका निवासस्थान था। उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती प्रभजोत कौर से मिलवाते हुए बताया कि यह पंजाबी की प्रसिद्ध कवयित्री हैं। उन्होंने अपनी पेंटिंग्स से भी परिचय कराया। एक दूसरे प्रसंग में परिवार की बात चलने पर प्रभजोत जी ने जब यह बताया कि वह सदन बहनें हैं उनका एक भाई था जो एक हादसे का शिकार हो गया इस पर वैसे उनके साथ को अपने सिर पर रखते हुए कहा कि यदि आपको कोई ऐतराज न हो तो आज से आप मुझे अपना भाई मान सकती हैं। मैं आपके निर्णय से सिहर उठा कि मैं सौभाग्यशाली यह निर्णय पूरी विनम्रता के साथ निभाऊंगा। और इस प्रकार इन दोनों के बीच भाई बहन का रिश्ता स्थापित हो गया। 1984 में उन्होंने मुझे पहली राखी बांधी थी और 2016 में अंतिम बार वह जब भी यहीं मुझे राखी भेजती रहीं। प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह की साहित्यिक दृष्टि दिल्ली में भी पंजाबी जैसी सक्रिय थी। 1984 में प्रभजोत जी को पंजाबी के पच्चीस कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला जो हिंदी में अज्ञेय को अंतरा के पर द्वारा काव्य संग्रह पर इन दोनों का सम्मान हिंदी जगत में भी सम्मान रूप से हुआ। इससे ही नहीं पंडित जवाहरलाल नेहरू के निधन पर श्रद्धांजलि स्वरूप उन्होंने एक कविता लिखी थी। लाल बहादुर शास्त्री की सरकार में इंदिरा गांधी सूचना एवं प्रसारण मंत्री थीं। उन्हें जब प्रभजोत जी ने एक बार आमंत्रित किया तो उन्हें यह कविता सौंपते हुए कहा कि इसका हिंदी अनुवाद मैंने इस भाई विनोद रोहि ने किया है। मेरे पास इस साहित्यिक दंपति के चुटकी छोटे हैं जो मेरे मार्गदर्शक बहुमती रहते हैं। प्रभजोत कौर और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह सारगर्भ पहली साहित्यिक दंपति हैं जिसे सेवानिवृत्त के अपने अपने क्षेत्र में साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है और भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से भी सम्मानित हुए हैं।

प्रभजोत कौर और और कर्नल नरेंद्रपाल सिंह की बेटी अमृपाल सिंह ने कहा कि उनका लालन पालन चाय और संस्कृति के माहौल में हुआ है चाहे हम भारत में रहे हों या विदेश अथवा अन्य किसी स्थान पर। इसलिए इन लोगों को कई भाषाएं आती हैं जैसे पंजाबी, उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी और पंजाबी से हमें आती हैं। वैसा में जब चाय जी सीधा आदमी थे वे चाय अंग्रेजी और फ्रेंच में ही आलोचना किया करते थे। इसलिए हम दोनों बहनें जिस सहमे माहौल में पली बढ़ीं उसमें हमें अपने जीवन का निर्णय लेने की भी पूरी आजादी मिली थी। वैसा वैसे कहा कि हमारा परिवार अच्छा खासा सांस्कृतिक मूल्यों का था जहां साहित्यिक चर्चाएं भी हुआ करती थीं, जैसे-जैसे भी और काम के विभिन्न आयामों पर भी आलोचना। शायद इन्हीं मिलाजुले संस्कारों का परिणाम था कि ऐसे बड़े काम किए गया (या का काम वैसा) बनने की बात कभी दिमाग में नहीं आई और मुझे पेंटिंग का शौक तो था। वैसे कई दफा मैंने अपनी एक प्रदर्शिनी भी आयोजित की है। उन्होंने यह भी बताया कि जब एक बार मैं जे जे सिंह के साथ उन्होंने ट्रांस किए तो वह कैप्टन थे इस तरह दोनों के बीच प्यार हुआ जो बाद में शादी में परिणत हो गया। इस विचार गोष्ठी में अन्य जिन विद्वानों ने हिस्सा ली वे हैं रेणुका सिंह, कवीश, पोलाक अरोरा, कुलबीर सोढल, हरविंदर सिंह, अमनदीप सभी, चमकौर कौर बराड़, जसवीर कुराल, कुलदीप लखी, अमरजीत सिंह सोखल, सुरजीत सिंह मन्पू, कार्तिकेय सिंह,सुखदीप सिंह, सुखवीर सिंह, दीपेंद्र सिंह, जो की दोनों अहि। दोनों ही दिन श्रोताओं की संख्या अच्छी खासी रही।